महामंडलेश्वर मौजूद रहे।

बागवान भाई मौसम के तापमान में गिरावट होने पर फल वृक्षों की करें विशेष देखभाल

दि ग्राम टुडे, कानपुर।

(संजय मौर्य)

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर के उद्यान विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर विवेक कुमार त्रिपाठी ने बताया कि बागबान भाइयों को अत्यधिक कम या अधिक तापमान, ओला और असामयिक वर्षा जैसी विभिन्न प्रतिकूल अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है जिसमें तापमान में गिरावट या अधिकता होने पर पौधों का बचाव अति आवश्यक है। उत्तरी भारत के मैदानी क्षेत्रों में दिसंबर जनवरी में जब तापमान अत्यधिक गिर जाता है और पाले जैसी स्थिति हो जाती है, जिससे पौधों की पत्तियां, पतली टहनिया शाखाएं, फूल और विकसित हो रहे फल मर जाते हैं। इससे पपीता, आम, लीची, नींबू समूह के फल, अमरूद आदि में अधिक हानि होती है। नवरोपित पौधों पर भी कम तापमान एवं पाले का अधिक प्रभाव दिखाई देता है, जिससे पौधे मर भी जाते हैं। तापक्रम की कमी से शाखा या तने का केंद्रीय भाग जिसमें कैंबियम होता हैं, मर जाता है, जिसको ब्लैक हार्ट कहते हैं। अत्यधिक अधिक तापमान कम होने से भूमि के पास जड़ों-तने के संधि स्थल की छाल चटक जाती है जिससे भी कोशिकाएं फट कर पौधे को नुकसान पहुंचाती हैं। अधिक पाला पड़ने पर तने या शाखा की छाल चटक जाती है, यह सब बिकार जब तापमान कम होता है या पाला पड़ता है तो पौधे की कोशिकाओं में जल का जमाव हो जाने के कारण, कोशिकाओं का आयतन बढ़ जाने से कोशिका भित्तियां फट जाने के कारण से होता है, जिसके फलस्वरूप पौधा मर जाता है। किसान भाइयों को इन सबसे बचाव के लिए जो अत्यधिक स्थाई उपाय हैं वह पाले को सहन सील पौधे जिसमें किन्नू, लोकाट, अमरूद, मैंडरिन और मीठी नारंगी आदि का रोपण है। पाला पड़ने के संभावित समय से एक-दो दिन पूर्व हल्की सिंचाई करना भी लाभदायक रहता है। बगीचे में लकड़ियां या फूस एकत्रित कर, उस पर मूवीऑल डालकर, उसको जलाकर हल्का धुआं करना चाहिए। नए पौधों को फूंस की टट्टियों या टाट से पूर्व दिशा खुला छोड़ कर ढक देते हैं। बगीचा रोपड़ से पूर्व उत्तर और पश्चिम दिशा में वायु प्रतिरोधक पट्टियां लगाने से सर्दी में कम और गर्मी में अधिक तापमान से बगीचे के पौधों की सुरक्षा रहती है। इस प्रकार से उपयुक्त विभिन्न विधियों को अपनाते हुए किसान/बागवान भाई अपने नव रोपित बगीचा और फल दे रहे फलों के पौधों को सर्दी में बचाकर अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्षः 16 अंक : 170 कानपुर, बुधवार 11 दिसम्बर 2024 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्यः 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

मौसम के तापमान में गिरावट होने पर करें फल वृक्षों की विशेष देखभाल

कानपुर । सीएसए के उद्यान विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर विवेक कुमार त्रिपाठी ने बताया कि बागबान भाइयों को अत्यधिक कम या अधिक तापमान, ओला और असामयिक वर्षा जैसी विभिन्न प्रतिकूल अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है जिसमें तापमान में गिरावट या अधिकता होने पर पौधों का बचाव अति आवश्यक है। उत्तरी भारत के मैदानी क्षेत्रों में दिसंबर जनवरी में जब तापमान अत्यधिक गिर जाता है और पाले जैसी स्थिति हो जाती है, जिससे पौधों की पत्तियां, पतली टहनिया/ शाखाएं, फूल और विकसित हो रहे फल मर जाते हैं। इससे पपीता, आम, लीची, नींबू समूह के फल, अमरूद आदि में अधिक हानि होती है। नवरोपित पौधों पर भी कम तापमान एवं पाले का अधिक प्रभाव दिखाई देता है, जिससे पौधे मर भी जाते हैं। तापक्रम की कमी से शाखा या तने का केंद्रीय भाग जिसमें कैंबियम होता हैं, मर जाता है,

जिसको ब्लैक हार्ट कहते हैं। अत्यधिक अधिक तापमान कम होने से भूमि के पास जड़ों-तने के संधि स्थल की छाल चटक जाती है जिससे भी कोशिकाएं फट कर पौधे को नुकसान पहुंचाती हैं। अधिक पाला पड़ने पर तने या शाखा की छाल चटक जाती है, यह सब बिकार जब तापमान कम होता है या पाला पड़ता है तो पौधे की कोशिकाओं में जल का जमाव हो जाने के कारण, कोशिकाओं का आयतन बढ़ जाने से कोशिका भित्तियां फट जाने के कारण से होता है, जिसके फलस्वरूप पौधा मर जाता है। किसान भाइयों को इन सबसे बचाव के लिए जो अत्यधिक स्थाई उपाय हैं वह पाले को सहन सील पौधे जिसमें किन्नू, लोकाट, अमरूद, मैंडरिन और मीठी नारंगी आदि का रोपण है। पाला पड़ने के संभावित समय से एक-दो दिन पूर्व हल्की सिंचाई करना भी लाभदायक रहता है। बगीचे में लकड़ियां या फूस एकत्रित कर, उस पर मूवीऑल डालकर, उसको जलाकर हल्का धुआं करना चाहिए। नए पौधों को फूंस की टट्टियों या टाट से पूर्व दिशा खुला छोड़ कर ढक देते हैं। बगीचा रोपड़ से पूर्व उत्तर और पश्चिम दिशा में वायु प्रतिरोधक पट्टियां लगाने से सर्दी में कम और गर्मी में अधिक तापमान से बगीचे के पौधों की सुरक्षा रहती है। इस प्रकार से उपयुक्त विभिन्न विधियों को अपनाते हुए किसान/बागवान भाई अपने नव रोपित बगीचा और फल दे रहे फलों के पौधों को सर्दी में बचाकर अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

वर्ष : 16 अंक : 334 लखनऊ बुधवार, 11 दिसंबर 2024 पृष्ठ : 12, मूल्य: ₹4/-

www.vishwavarta.com

विश्ववार्ता

सच्ची ख़बर, पैनी नज़र

तापमान गिरने पर फलदार वृक्षों की देखभाल जरूरी

» उद्यान विभाग के अध्यक्ष ने दी जानकारी

विश्ववार्ता संवाददाता

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के उद्यान विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. विवेक कुमार त्रिपाठी ने बताया कि बागबान भाइयों को अत्यधिक कम या अधिक तापमान, ओला और असामयिक वर्षा जैसी विभिन्न प्रतिकूल अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है। जिसमें तापमान में गिरावट या अधिकता होने पर पौधों का बचाव अति आवश्यक है।

उत्तरी भारत के मैदानी क्षेत्रों में दिसंबर, जनवरी में जब तापमान अत्यधिक गिर जाता है और पाले जैसी स्थिति हो जाती है, जिससे पौधों की पत्तियां, पतली टहनिया, शाखाएं, फूल और विकसित हो रहे फल मर जाते हैं। इससे पपीता, आम, लीची, नींबू समूह के फल, अमरूद आदि में अधिक हानि होती है।

नवरोपित पौधों पर भी कम तापमान एवं पाले का अधिक प्रभाव दिखाई देता है, जिससे भी पौधे मर भी जाते हैं। तापक्रम की कमी से शाखा या तने का केंद्रीय भाग जिसमें कैंबियम होता हैं, जिसको ब्लैक हार्ट कहते हैं वह भाग मर जाता है। अत्यधिक तापमान कम होने से भूमि के पास जड़ों और तने के संधि स्थल की छाल चटक जाती है, जिससे भी कोशिकाएं फट कर पौधे को नुकसान पहुंचाती हैं। अधिक पाला पड़ने पर तने या शाखा की छाल चटक जाती है।

कानपुर से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

सदैव सच के साथ...

समाज का साथी

॥ मूल्य 2:00/- रुपए ॥ कानपुर ॥ बुधवार ॥ 11 दिसंबर 2024

कोतवाली चौराहे पर आग से खेल रहे अतिक्रमणकारी दुकानदार पृष्ठ... 03

कानपुर के ज्योति श्यामदासानी हत्याकांड की कथित साजिशकर्ता बरी पृष्ठ

र्ट मौसम के तापमान में गिरावट होने पर करें फल वृक्षों की विशेष देखभाल

» समाज का साथी

कानपुर। सीएसए के उद्यान विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर विवेक कुमार त्रिपाठी ने बताया कि बागबान भाइयों को अत्यधिक कम या अधिक तापमान, ओला और असामयिक वर्षा जैसी विभिन्न प्रतिकूल अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है जिसमें तापमान में गिरावट या अधिकता होने पर पौधों का बचाव अति आवश्यक है। उत्तरी भारत के मैदानी क्षेत्रों में दिसंबर जनवरी में जब तापमान अत्यधिक गिर जाता है और पाले जैसी स्थिति हो जाती है, जिससे पौधों की पत्तियां, पतली टहनिया/शाखाएं, फूल और विकसित हो रहे फल मर जाते हैं। इससे पपीता, आम, लीची, नींबू समूह के फल, अमरूद आदि में अधिक हानि होती है। नवरोपित पौधों पर भी कम तापमान एवं पाले का अधिक प्रभाव दिखाई देता है, जिससे पौधे मर भी जाते हैं। तापक्रम की कमी से शाखा या तने का केंद्रीय भाग जिसमें कैंबियम होता हैं, मर जाता है, जिसको ब्लैक हार्ट कहते हैं। अत्यधिक अधिक तापमान कम होने से भूमि के पास जड़ों-तने के संधि स्थल की छाल चटक जाती है जिससे भी कोशिकाएं फट कर पौधे को नुकसान पहुंचाती हैं।

अधिक पाला पड़ने पर तने या शाखा की छाल चटक जाती है, यह सब बिकार जब तापमान कम होता है या पाला पड़ता है तो पौधे की कोशिकाओं में जल का जमाव हो जाने के कारण, कोशिकाओं का आयतन बढ़ जाने से कोशिका भित्तियां फट जाने के कारण से होता है, जिसके फलस्वरूप पौधा मर जाता है। किसान भाइयों को इन सबसे बचाव के लिए जो अत्यधिक स्थाई उपाय हैं वह पाले को सहन सील पौधे जिसमें किन्नू, लोकाट, अमरूद, मैंडरिन और मीठी नारंगी आदि का रोपण है। पाला पड़ने के संभावित समय से एक-दो दिन पूर्व हल्की सिंचाई करना भी लाभदायक रहता है। बगीचे में लकड़ियां या फूस एकत्रित कर, उस पर मूवीऑल डालकर, उसको जलाकर हल्का धुआं करना चाहिए। नए पौधों को फूंस की टट्टियों या टाट से पूर्व दिशा खुला छोड़ कर ढक देते हैं।

बगीचा रोपड़ से पूर्व उत्तर और पश्चिम दिशा में वायु प्रतिरोधक पट्टियां लगाने से सर्दी में कम और गर्मी में अधिक तापमान से बगीचे के पौधों की सुरक्षा रहती है। इस प्रकार से उपयुक्त विभिन्न विधियों को अपनाते हुए किसान/बागवान भाई अपने नव रोपित बगीचा और फल दे रहे फलों के पौधों को सर्दी में बचाकर अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल मोबाइल नंबर 9956 8340 16

Wednesday, 11-12-24

बागवान भाई मौसम के तापमान में गिरावट होने पर करें फल वृक्षों की विशेष देखभाल

किसान भाइयों को इन सबसे बचाव के लिए जो अत्यधिक स्थाई उपाय हैं वह पाले को सहन सील पौधे जिसमें किन्नू, लोकाट, अमरूद, मैंडरिन और मीठी नारंगी आदि का रोपण है। पाला पड़ने के संभावित समय से एक-दो दिन पूर्व हल्की सिंचाई करना भी लाभदायक रहता है। बगीचे में लकड़ियां या फूस एकत्रित कर, उस पर मूवीऑल डालकर, उसको जलाकर हल्का धुआं करना चाहिए। नए पौधों को फूंस की टट्टियों या टाट से पूर्व दिशा खुला छोड़ कर ढक देते हैं। बगीचा रोपड़ से पूर्व उत्तर और पश्चिम दिशा में वायु प्रतिरोधक पट्टियां लगाने से सर्दी में कम और गर्मी में अधिक तापमान से बगीचे के पौधों की सुरक्षा रहती है। इस प्रकार से उपयुक्त विभिन्न विधियों को अपनाते हुए किसान/बागवान भाई अपने नव रोपित बगीचा और फल दे रहे फलों के पौधों को सर्दी में बचाकर अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल सत्य का असर समाचार पत्र चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर के उद्यान विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर विवेक कुमार त्रिपाठी ने बताया कि बागबान भाइयों को अत्यधिक कम या अधिक तापमान, ओला और असामयिक वर्षा जैसी विभिन्न प्रतिकूल अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है जिसमें तापमान में गिरावट या अधिकता होने पर पौधों का बचाव अति आवश्यक है। उत्तरी भारत के मैदानी क्षेत्रों में दिसंबर जनवरी में जब तापमान अत्यधिक गिर जाता है और पाले जैसी स्थिति हो जाती है, जिससे पौधों की पत्तियां, पतली टहनिया/ शाखाएं, फूल और विकसित हो रहे फल मर जाते हैं। इससे पपीता, आम, लीची, नींबू समूह के फल, अमरूद आदि में अधिक हानि होती है। नवरोपित पौधों पर भी कम तापमान एवं पाले का अधिक प्रभाव दिखाई देता है, जिससे पौधे मर भी जाते हैं। तापक्रम की कमी से शाखा या तने का केंद्रीय भाग जिसमें कैंबियम होता हैं, मर जाता है, जिसको ब्लैक हार्ट कहते हैं। अत्यधिक अधिक तापमान कम होने से भूमि के पास जड़ों-तने के संधि स्थल की छाल चटक जाती है जिससे भी कोशिकाएं फट कर पौधे को नुकसान पहुंचाती हैं। अधिक पाला पड़ने पर तने या शाखा की छाल चटक जाती है, यह सब बिकार जब तापमान कम होता है या पाला पड़ता है तो पौधे की कोशिकाओं में जल का जमाव हो जाने के कारण, कोशिकाओं का आयतन बढ़ जाने से कोशिका भित्तियां फट जाने के कारण से होता है, जिसके फलस्वरूप पौधा मर जाता है।

रहस्य संदेश 11/12/2024 कानपुर/ शाहजहांपुर/ उन्नाव

बागवान भाई मौसम के तापमान में गिरावट होने पर करें फल वृक्षों की करें विशेष देखभाल

अनवर अशरफ

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर के उद्यान विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर विवेक कुमार त्रिपाठी ने बताया कि बागबान भाइयों को अत्यधिक कम या अधिक तापमान, ओला और असामयिक वर्षा जैसी विभिन्न प्रतिकूल अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है जिसमें तापमान में गिरावट या अधिकता होने पर पौधों का बचाव अति आवश्यक है। उत्तरी भारत के मैदानी क्षेत्रों में दिसंबर जनवरी में जब तापमान अत्यधिक गिर जाता है और पाले जैसी स्थिति हो जाती है, जिससे पौधों की पत्तियां, पतली टहनिया/ शाखाएं, फूल और विकसित हो रहे फल मर जाते हैं। इससे पपीता, आम, लीची, नींबू समूह के फल, अमरूद आदि में अधिक हानि होती है। नवरोपित पौधों पर भी कम तापमान एवं

पाले का अधिक प्रभाव दिखाई देता है, जिससे पौधे मर भी जाते हैं। तापक्रम की कमी से शाखा या तने का केंद्रीय भाग जिसमें कैंबियम होता हैं, मर जाता है, जिसको ब्लैक हार्ट कहते हैं। अत्यधिक अधिक तापमान कम होने से भूमि के पास जड़ों-तने के संधि स्थल की छाल चटक जाती है जिससे भी कोशिकाएं फट कर पौधे को नुकसान पहुंचाती हैं। अधिक पाला पड़ने पर तने या शाखा की छाल चटक जाती है, यह सब बिकार जब तापमान कम होता है या पाला पड़ता है तो पौधे की कोशिकाओं में जल का जमाव हो जाने के कारण, कोशिकाओं का आयतन बढ़ जाने से कोशिका भित्तियां फट जाने के कारण से होता है, जिसके फलस्वरूप पौधा मर जाता है। किसान भाइयों को इन सबसे बचाव के लिए जो अत्यधिक स्थाई उपाय हैं वह पाले को सहन सील पौधे जिसमें किन्नू, लोकाट, अमरूद, मैंडरिन और मीठी नारंगी आदि का रोपण है। पाला पड़ने के संभावित समय से एक-दो दिन पूर्व हल्की सिंचाई करना भी लाभदायक रहता है। बगीचे में लकड़ियां या फूस एकत्रित कर, उस पर मूवीऑल डालकर, उसको जलाकर हल्का धुआं करना चाहिए। नए पौधों को फूंस की टट्टियों या टाट से पूर्व दिशा खुला छोड़ कर ढक देते हैं। बगीचा रोपड़ से पूर्व उत्तर और पश्चिम दिशा में वायु प्रतिरोधक पट्टियां लगाने से सर्दी में कम और गर्मी में अधिक तापमान से बगीचे के पौधों की सुरक्षा रहती है। इस प्रकार से उपयुक्त विभिन्न विधियों को अपनाते हुए किसान/बागवान भाई अपने नव रोपित बगीचा और फल दे रहे फलों के पौधों को सर्दी में बचाकर अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

तापमान में गिरावट या अधिकता होने पर पौधों का बचाव अति आवश्यक: प्रो.विवेक त्रिपाठी

खरी कसौटी

ब्यूरो

कानपुर/ चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर के उद्यान विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रोफ़ेसर विवेक कुमार त्रिपाठी ने मंगलवार को बताया कि बागबानो को अत्यधिक कम या अधिक तापमान, ओला और असामयिक वर्षा जैसी विभिन्न प्रतिकूल अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है जिसमें तापमान में गिरावट या अधिकता होने पर पौधों का बचाव अति आवश्यक है। उत्तरी भारत के मैदानी क्षेत्रों में दिसंबर जनवरी में जब तापमान अत्यधिक गिर जाता है और

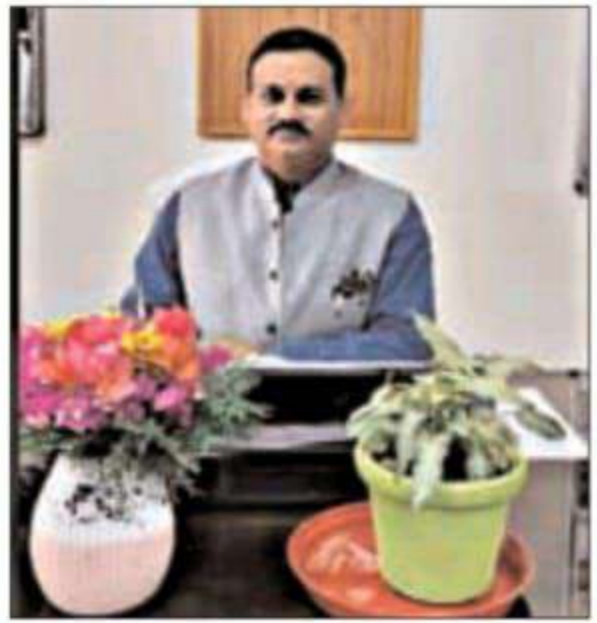

पाले जैसी स्थिति हो जाती है, जिससे पौधों की पत्तियां, पतली टहनिया/ शाखाएं, फूल और विकसित हो रहे फल मर जाते हैं। इससे पपीता, आम, लीची, नींबू समूह के फल, अमरूद आदि में अधिक हानि होती है। नवरोपित पौधों पर भी कम तापमान एवं पाले का अधिक प्रभाव दिखाई देता है, जिससे पौधे मर भी जाते हैं। तापक्रम की कमी से शाखा या तने का केंद्रीय भाग जिसमें कैंबियम होता हैं, मर जाता है, जिसको ब्लैक हार्ट कहते हैं। अत्यधिक तापमान कम होने से भूमि के पास जड़ों-तने के संधि स्थल की छाल चटक जाती है जिससे भी कोशिकाएं फट कर पौधे को नुकसान पहुंचाती हैं। अधिक पाला पड़ने पर तने या शाखा की छाल चटक जाती है, जब तापमान कम होता है या पाला पड़ता है तो पौधे की कोशिकाओं में जल का जमाव हो जाने के कारण, कोशिकाओं का आयतन बढ़ जाने से कोशिका भित्तियां फट जाती है जिसके फलस्वरूप पौधा मर जाता है। उन्होंने बताया कि इन सब से बचाव के लिए किसानों को पाले के सहन शील पौधे जैसे किन्नू, लोकाट, अमरूद, मैंडरिन और मीठी नारंगी आदि का रोपण करना चाहिए। पाला पड़ने के संभावित समय से एक-दो दिन पूर्व हल्की सिंचाई करना भी लाभदायक रहता है। बगीचे में लकड़ियां या फूस एकत्रित कर, उस पर मूवीऑल डालकर, उसको जलाकर हल्का धुआं करना चाहिए। नए पौधों को फूंस की टट्टियों या टाट से पूर्व दिशा खुला छोड़ कर ढक देते हैं। बगीचा रोपड़ से पूर्व उत्तर और पश्चिम दिशा में वायु प्रतिरोधक पट्टियां लगाने से सर्दी में कम और गर्मी में अधिक तापमान से बगीचे के पौधों की सुरक्षा रहती है। इस प्रकार से उपयुक्त विभिन्न विधियों को अपनाते हुए किसान/बागवान अपने नव रोपित बगीचा और फल दे रहे फलों के पौधों को सर्दी में बचाकर अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।